इंद्रधनुष

2023

राजभाषा पत्रिका
तमिलनाडु परिमंडल

कार्यालय में योगा दिवस

संरक्षक एवं मुख्य संपादक

श्री डी. तमिलमणि, आई टी एस

मुख्य महाप्रबंधक

संपादक मंडल

श्री सुब्रतो चटर्जी

वरिष्ठ महाप्रबंधक (मा.सं एवं प्रशा)

श्री के. रमेश

उप महाप्रबंधक (प्रशासन) व मुख्य राजभाषा अधिकारी

श्री ए. अरवाळी

मुख्य लेखा अधिकारी (वित्त) व

सह मुख्य राजभाषा अधिकारी

श्री जे. कुमार

सहायक महाप्रबंधक (प्रशासन)

सह संपादक

के.अरुल सेल्वी, उप मंडल अभियंता (राजभाषा), परिमंडल कार्यालय

डॉ.राधिका रानी, उप मंडल अभियंता (राजभाषा), तिरूनेलवेली बी.ए

आर.तणिकाचलम, उप मंडल अभियंता (राजभाषा), सेलम बी.ए

बी.कावेट्टी रंगन उप मंडल अभियंता (राजभाषा), कोयंबत्तूर बी.ए

पी.डी,राजी मोल, उप मंडल अभियंता (राजभाषा), तिरूच्ची बी.ए

टी.एस.मोती लाल, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, तिरूच्ची बी.ए

आर.राधा, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक, वेल्लूर बी.ए

ए.सरवणन, उप मंडल अभियंता (अई.टी), परिमंडल कार्यालय

टी.तणिकैवेलू, ओ.एस परिमंडल कार्यालय

इंद्रधनुष

बी एस एन एल
कनेक्टिंग इन्डिया
फास्टर

BSNL
Connecting India
faster

राजभाषा पत्रिका 2023
तमिलनाडु परिमंडल

भारत संचार निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
BHARAT SANCHAR NIGAM LIMITED
(A Govt. of India Enterprise)

तमिलनाडु दूरसंचार परिमंडल,
प्रशासनिक भवन,सातवी मंजिल,
16, ग्रीम्स रोड, चेन्नै-600006
Tamilnadu Telecom Circle,
Administrative Building, 7th Floor,
16, Greams Road, Chennai-600 006
फोन/**Phone**:**044-28290919/28290929**
फैक्स/**FAX**:**044-28292129**
ई मेल/**Email**: **cgm_tn@bsnl.co.in**

डी. तमिलमणि, आई.टी.एस
मुख्य महाप्रबंधक
D. THAMIZHMANI, I.T.S.
Chief General Manager

संदेश

मैं यह जानकर अत्यंत खुश हूँ कि भारत संचार निगम लिमिटेड, तमिलनाडु परिमंडल की राजभाषा गृह पत्रिका "इन्द्रधनुष" का प्रकाशन किया जा रहा है।

इस पत्रिका में हमारे परिमंडल के सभी व्यापार क्षेत्रों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के रचनात्मक कृतियों को जैसे, सृजनात्मक लेख, कविता, चित्रकला आदि को स्थान प्रदान किया गया है । इसमें तमिलनाडु परिमंडल की राजभाषा गतिविधियाँ, राजभाषा नियम और केन्द्र सरकार एवं बी.एस.एन.एल की राजभाषाई प्रोत्साहन याजनाएँ आदि का विवरण स्पष्ट किया गया है। इस बात का भी हर्ष है कि बीएसएनएस कर्मचारियों और उनके बच्चों में इतनी प्रतिभा छिपी है और इसे इस पत्रिका के जरिए ही बाहर ला सकते हैं। राजभाषा कार्यान्वयन भी एक अंग है । दूसरी ओर हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम देश के हर कोने के लोगों को संचार की सेवा करने में अग्रणी है। उस पावन कार्य को और भी निष्ठा, उत्तेजित एवं उत्साह से करने पर हमारा बीएसएनएल भारत के संचार के क्षेत्र में लोगों की सेवा करने में सर्वप्रथम रहेगा ।

इस पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए योगदान प्रदान करने वाले परिमंडल कार्यालय एवं बीए कार्यालयों की पत्रिका के संपादन समिति को बधाई देता हूँ ।

शुभकामनाओं सहित।

(डी तमिलमणि, आई टी एस)
मुख्य महाप्रबंधक एवं
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
तमिलनाडु परिमंडल, चेन्नै

भारत संचार निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
BHARAT SANCHAR NIGAM LIMITED
(A Govt. of India Enterprise)

तमिलनाडु दूरसंचार परिमंडल,
प्रशासनिक भवन,सातवी मंजिल,
16, ग्रीम्स रोड, चेन्नै-600006
Tamilnadu Telecom Circle,
Administrative Building, 7th Floor,
16, Greams Road, Chennai-600 006
फोन/**Phone**:**044-28290919/28290929**
फैक्स/**FAX**:**044-28292129**
ई मेल/**Email**: **cgm_tn@bsnl.co.in**

के. गीतांजली
वरिष्ठ महाप्रबंधक (वित्त)
K. GEETHANJALI
Senior General Manager (Finance)

संदेश

मुझे बड़ी खुशी हो रही है कि तमिलनाडु परिमंडल में वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका इन्द्रधनुष का विमोचन किया जा रहा है। इससे यह पता चलता है कि कार्यालय में हिंदी की प्रगति निरंतर रूप से आगे है साथ-साथ राजभाषा हिन्दी में अपना विचार व्यक्त करने के लिए पत्रिका मंच प्रदान कर रही है। हम इसके लिए प्रतिबद्ध हैं। जिन्होंने इस पत्रिका के लिए लेख दिया, वे बधाई के पात्र हैं। इस अवसर पर मैं आप सब को हिंदी दिवस और पत्रिका के उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं।

(के.गीतांजली)
वरिष्ठ महाप्रबंधक (वित्त)

भारत संचार निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
BHARAT SANCHAR NIGAM LIMITED
(A Govt. of India Enterprise)

तमिलनाडु दूरसंचार परिमंडल,
प्रशासनिक भवन,सातवी मंजिल,
16, ग्रीम्स रोड, चेन्नै-600006
Tamilnadu Telecom Circle,
Administrative Building, 7th Floor,
16, Greams Road, Chennai-600 006
फोन/**Phone**:**044-28290919/28290929**
फैक्स/**FAX**:**044-28292129**
ई मेल/**Email**: **cgm_tn@bsnl.co.in**

सुब्रतो चटर्जी
वरिष्ठ महाप्रबंधक
(मानव संसाधन व प्रशासन)
SUBRATA CHATTERJEE
Senior General Manager (HR & Admn)

संदेश

मुझे बहुत खुशी हो रही है कि हर वर्ष की तरह 2023 में भी बी.एस.एन.एल तमिलनाडु परिमंडल में वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका इन्द्रधनुष का विमोचन किया जा रहा है। इसमें शक नही है कि हमारे कर्मचारी राजभाषा के प्रति अपना कर्तव्य को अच्छी तरह से समझते है । गृह पत्रिका इन्द्रधनुष का विमोचन इसी का प्रतिक है। मुझे खुशी है कि सभी के समायोजित प्रयासों से यह पत्रिका राजभाषा कार्यान्वयन की दिशा में हमारी चेष्टाओं को प्रतिबिम्बित करनेवाली एक छवि बनकर उभरी है ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए योगदान प्रदान करने वाले परिमंडल कार्यालय एवं बीए कार्यालयों की पत्रिका के संपादन समिति को बधाई दे रहा हूँ ।

सुब्रतो चटर्जी
वरिष्ठ महाप्रबंधक
(मानव संसाधन व प्रशासन)

भारत संचार निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
BHARAT SANCHAR NIGAM LIMITED
(A Govt. of India Enterprise)

तमिलनाडु दूरसंचार परिमंडल,
प्रशासनिक भवन,सातवी मंजिल,
16, ग्रीम्स रोड, चेन्नै-600006
Tamilnadu Telecom Circle,
Administrative Building, 7th Floor,
16, Greams Road, Chennai-600 006
फोन/**Phone**:**044-28290919/28290929**
फैक्स/**FAX**:**044-28292129**
ई मेल/**Email**: **cgm_tn@bsnl.co.in**

के. रमेश
उप महाप्रबंधक (प्रशासन)
मुख्य राजभाषा अधिकारी
K. RAMESH
Deputy General Manager (Admn) &
Chief Official Language Officer

संदेश

वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका इन्द्रधनुष के विमोचन से मुझे अत्यन्त खुशी हो रही है। मेरा सौभाग्य है कि मैं तमिलनाडु परिमंडल में मुख्य राजभाषा अधिकारी का कर्तव्य निभा रहा हूं। राजभाषा के कार्यान्वयन की दिशा में तमिलनाडु परिमंडल में कार्यरत सभी हिंदी कार्मिक जी-जान से मेहनत कर रहे हैं। उनको बधाई देता हूं क्योंकि वे सदैव हिंदी के प्रगति की दिशा में अन्य कर्मचारियों को प्रोत्साहित करते हैं। पत्रिका के लिए जिन कर्मचारियों ने सामग्री दिए हैं, उनको बहुत बहुत बधाई। बच्चों ने अपना चित्रों के जरिए अपने प्रतिभा को आगे लेकर आए हैं, उनको भी बहुत बहुत बधाई।

पत्रिका के सफल विमोचन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

के .रमेश
उप महाप्रबंधक (प्रशासन)

भारत संचार निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
BHARAT SANCHAR NIGAM LIMITED
(A Govt. of India Enterprise)

तमिलनाडु दूरसंचार परिमंडल,
प्रशासनिक भवन,सातवी मंजिल,
16, ग्रीम्स रोड, चेन्नै-600006
Tamilnadu Telecom Circle,
Administrative Building, 7th Floor,
16, Greams Road, Chennai-600 006
फोन/**Phone:044-28290919/28290929**
फैक्स/**FAX:044-28292129**
ई मेल/**Email: cgm_tn@bsnl.co.in**

अ. अरवाळी
मुख्य लेखा अधिकारी (वित्त)
एवं सह मुख्य राजभाषा अधिकारी
A. ARAVAZHI
Chief Account Officer (FINANCE)
& Associate Chief Official Language Officer

संदेश

मुझे खुशी हो रही है कि तमिलनाडु परिमंडल में वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका इन्द्रधनुष का विमोचन किया जा रहा है। तमिलनाडु परिमंडल राजभाषा की नीति निर्देशों के कार्यान्वयन में बहुत आगे है। पत्रिका का प्रकाशन इस दिशा में और एक और कदम आगे बढ़ रहा है।

तमिलनाडु परिमंडल में काम कर रहे सभी उप मंडल अभियंता (राजभाषा) और वरिष्ठ हिंदी अनुवादकों को बधाई देता हूँ और पत्रिका के सफल विमोचन के लिए मेरी शुभकामनाएं।

अ. अरवाळी
मुख्य लेखा अधिकारी (वित्त)

भारत संचार निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
BHARAT SANCHAR NIGAM LIMITED
(A Govt. of India Enterprise)

तमिलनाडु दूरसंचार परिमंडल,
प्रशासनिक भवन,सातवी मंजिल,
16, ग्रीम्स रोड, चेन्नै-600006
Tamilnadu Telecom Circle,
Administrative Building, 7th Floor,
16, Greams Road, Chennai-600 006
फोन/**Phone:044-28290919/28290929**
फैक्स/**FAX:044-28292129**
ई मेल/**Email: cgm_tn@bsnl.co.in**

जे. कुमार
सहायक महाप्रबंधक (प्रशासन)
J. KUMAR
Assistant General Manager (ADMN)

संदेश

मुझे खुशी हो रही है कि तमिलनाडु परिमंडल में वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका इन्द्रधनुष का विमोचन किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी कर्मचारियों को बधाई देता हूँ। साथ साथ तमिलनाडु परिमंडल में कार्यरत सभी हिंदी कर्मियों को भी ढ़ेर सारी बधाइयाँ देता हूँ कि वे राजभाषा हिंदी के प्रति बेखूबी अपना जिम्मेदारी निभा रहे हैं।

पत्रिका के सफल विमोचन के लिए मेरी शुभकामनाएं और बधाई देता हूँ।

जे. कुमार
सहायक महाप्रबंधक (एस.आर एवं कल्याण)

भारत संचार निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)
BHARAT SANCHAR NIGAM LIMITED
(A Govt. of India Enterprise)

तमिलनाडु दूरसंचार परिमंडल,
प्रशासनिक भवन,सातवी मंजिल,
16, ग्रीम्स रोड, चेन्नै-600006
Tamilnadu Telecom Circle,
Administrative Building, 7th Floor,
16, Greams Road, Chennai-600 006
फोन/**Phone**:**044-28290919/28290929**
फैक्स/**FAX**:**044-28292129**
ई मेल/**Email**: **cgm_tn@bsnl.co.in**

के. अरुल सेल्वी
उप मंडल अभियंता (राजभाषा)
K. ARUL SELVI
SUB DIVISIONAL ENGINEER (OL)

संपादकीय

वर्ष 2023 के लिए, मुख्य महाप्रबंधक, तमिलनाडु परिमंडल कार्यालय के वार्षिक राजभाषा गृह पत्रिका इन्द्रधनुष को आपके सामने रखते हुए केवल मुझे ही नही बल्कि तमिलनाडु परिमंडल के सभी उप मंडल अभियंता (राजभाषा) और वरिष्ठ हिंदी अनुवादकों को अत्यन्त खुशी और गर्व हो रहा है। इस पत्रिका के जरिए हम गर्व से कहते है कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में तमिलनाडु दूरसंचार परिमंडल सदैव आगे है। तमिलनाडु परिमंडल में हिंदी में काम करने की झिझक दूर करने के लिए हम कर्मचारियों से अत्यन्त सहज एवं सरल हिंदी का प्रयोग करने हेतु प्रोत्साहित करते है जिससे वे कार्यालयीन हिंदी में अपना योगदान देने में सक्षम हैं। राजभाषा कार्यान्वयन के हर कदम हमें मार्गदर्शन और प्रोत्साहन दे रहे सभी वरिष्ठ अधिकारीगण का हम तहे दिल से धन्यवाद देते हैं। जिन कर्मचारियों ने पत्रिका के लिए लेख, कविताएं इत्यादि दिया, उनके प्रति हम सब हिंदी कार्मिक आभार प्रकट करते है। आशा करते हैं कि यह पत्रिका आपको रोचक लगेगी। आपके सुझाव आमंत्रित हैं।

सधन्यवाद, जय हिंद।

के.अरुल सेल्वी
उप मंडल अभियंता (राजभाषा)

राजभाषा अधिनिया 1963 धारा 3(3) के अंतर्गत द्विभाषी रुप में जारी किए जानेवाले दस्तावेज

Documents to be issued in bilingual form under Section 3(3) of Official Language Act 1963

1.	संकल्प	#	Resolutions
2.	सामान्य आदेश	#	General Orders
3.	नियम	#	Rules
4.	अधिनियम	#	Notifications
5.	प्रशासनिक रिपोर्ट	#	Administrative Report
6	प्रेस विज्ञप्तियाँ	#	Press Communique
7.	संविदा	#	Contracts
8.	करार	#	Agreements
9.	अनुज्ञप्ति	#	Licences
10	अनुज्ञा पत्र	#	Permits
11.	सूचना	#	Notices
12	निविदा	#	Tender forms
13.	संसद में प्रस्तुत कीजानेवाली प्रशासनिक एवं अन्य रिपोर्ट	#	Administrative and other reports laid before Parliament

सुधीर कुमार मिश्र
वरिष्ठ महाप्रबंधक (सतर्कता)
बी एस एन एल तमिलनाडु परिमंडल

कर्म का सिद्धांत

हम इस दुनिया में सतत रूप से अपने अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं और इनका मुख्य उद्देश्य हमारी आजीविका को बनाए रखना है। ये कार्य शिक्षा से लेकर हमारे चुने हुए व्यवसायों और पेशों तक हो सकते हैं। हममें से कुछ लोग स्वयं को सामाजिक कल्याण के लिए भी समर्पित करते हैं। इन सभी कार्यों के लिये कुछ न कुछ कर्तव्य और जिम्मेदारियों का पालन करना होता हैं।

हममें से कई लोग जो किसी संगठन या कार्यालय में काम कर रहे हैं, उनके लिये तो ज़िम्मेदारियाँ और कर्तव्य अच्छी तरह से निर्धारित रहते हैं। पर संगठनात्मक ढांचे में अन्य जिम्मेदारियां भी होती हैं, जिसमें एक वरिष्ठ मैनेजर के रूप में हमें अपने अधीनस्थ मैनेजरों को निर्धारित लक्ष्यों के लिए प्रभावित और प्रेरित करना होता है और साथ में एक कनिष्ठ के रूप में हमें भी स्वयं को अपने वरिष्ठ के समक्ष एक अच्छे मैनेजर के रूप में सिद्ध करना होता है।

इस संबंध में यह एक निर्विवाद सत्य है कि अंततः अपनी ज़िम्मेदारियों और कर्तव्यों का पालन करने के बाद सभी लोग स्वाभाविक रूप से खुश और संतुष्ट होना चाहते हैं।

लेकिन यह दुनिया एक जटिल जगह है। यहां तक कि जब हम अपने कर्तव्यों और जिम्मेदारियों को ईमानदारी एवं सच्चाई से और अपने सर्वश्रेष्ठ प्रयास से करते हैं, तब भी हमें अक्सर असहज स्थितियों का सामना करना पड़ता है। हम इस भय से घिरे रहते हैं कि कहीं हम अपने कार्यों के लक्ष्य को पाने में असफल न हो जायें। कभी-कभी हमें अपने काम करते समय, किसी के लिये कुछ गलत हो जायेगा, ऐसे पश्चाताप की भावना का सामना करना पड़ता है। ऐसी भावनाएँ कभी-कभी हमें अपने कार्यों एवं कर्तव्यों से दूर भागने के लिए भी प्रेरित कर सकती हैं। असफलताओं में हम प्रायः दुखी, असमर्थ और निराश महसूस करते हैं। यह अजीब बात है! जब हम काम के प्रति सच्चे हैं तो हमें खुशी और संतुष्टि क्यों नहीं मिल सकती! ये सभी चीजें हमें भ्रमित करती हैं. हमें इसके पीछे का कारण और इस स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता जानने का प्रयत्न करना चाहिए।

आइए इसके लिए पहले हम निष्पक्ष होकर और फिर सबसे चर्चित ग्रंथों में से एक, "भगवद गीता" पर गौर करें। यह कर्म के सिद्धांत, हमारे निर्धारित कर्तव्यों के बारे में विस्तार से बात करता है। गीता के प्रसिद्ध श्लोकों में से एक (BG 2.47) बहुत संक्षेप में चार बातें कहता है: (i) केवल कर्म करना (कर्तव्य, निर्धारित कार्य) आपके अधिकार में है, (ii) आपके कर्म का फल आपके अधिकार में नहीं है, (iii) आप अपने कर्मों के फल का कारण न

बनें (अपने आप को न समझें) और (iv) आपको अकर्म (निष्क्रियता, यानी निर्धारित कार्यों के त्याग) की तरफ़ नहीं जाना चाहिए। इस श्लोक के पहले और बाद में जो कुछ कहा गया है, और जिस संदर्भ के बारे में इसे कहा गया है, उसे जानने के बाद इसके पीछे की भावना को अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

"भगवद गीता" का पाठ अर्जुन को महाभारत के युद्ध क्षेत्र में सुनाया गया था। अर्जुन को क्षत्रिय (एक योद्धा समुदाय) होने के नाते, अन्याय के खिलाफ लड़ाई में अपने योद्धा होने का कर्तव्य निभाना था। परन्तु अपनी और शत्रु की सेना में अपने सम्बन्धियों को देखकर वह युद्ध के विनाशकारी परिणामों की कल्पना से घिर गये। उन्हे संदेह, भय और अपराधबोध की भावना महसूस हुई कि उसके युद्ध के कृत्य के परिणामस्वरूप उसके अपने रिश्तेदारों सहित कई लोगों की हत्या हो जाएगी। अर्जुन ने सोचा कि इन कार्यों के ऐसे भयानक परिणामों का ज़िम्मेवार और कारण वही होगा। इस भय और पश्चाताप की भावना उत्पन्न होने के कारण उन्होंने घोषणा की कि वह युद्ध के इस कार्य को छोड़ देंगे। इन्हीं स्थितियों में कृष्ण ने उन्हे अपने कर्तव्यों की याद दिलाई। हजारों साल पहले दी गई इस सीख की प्रासंगिकता आधुनिक समय में निष्पक्ष तरीके से सुनिश्चित करने की जरूरत है। इसे आस्तिक (believer), यानी जो गीता को ईश्वर का निर्देश मानता है, और नास्तिक (non-believer) दोनों के नज़रिये से समझने की ज़रूरत है। यदि यह प्रासंगिक है, तो यह आस्तिकों (believers) एवं नास्तिकों (non-believers) दोनों के लिये लाभकारी होगा।

सबसे पहले, एक आस्तिक (believer) यह समझता है कि उसे अपने कर्म यानी सौंपे गए कार्य का पालन करना है, और वह अपना कर्म करने के लिए स्वतंत्र है। वह मानता है कि कर्म का फल (परिणाम) विभिन्न कारकों पर निर्भर करता है जैसे पिछले जीवन के कर्म, प्रकृति का नियम और ईश्वरीय नियम। उसके वर्तमान कर्म केवल उसके भावी जीवन को निर्धारित करने के लिए हैं। यह भलीभांति जानने के कारण वह अपने वर्तमान कर्मों के परिणाम से प्रभावित नहीं होता। वह मौजूदा नतीजों के पीछे खुद को जिम्मेदार नहीं मानता। वह ईश्वर के निःस्वार्थ कर्म से ज्ञान प्राप्त करता है। न तो इस संपूर्ण ब्रह्मांड में सर्वोच्च परमात्मा के लिए कोई कर्तव्य निर्धारित है, न ही कोई महत्वपूर्ण चीज़ है जिसका उसके पास अभाव है और जिसे उसे प्राप्त करने की आवश्यकता है। परंतु यह संपूर्ण ब्रह्मांड, ईश्वर के मार्गदर्शन में, निरंतर व्यवस्थित ढंग से कार्य कर रहा है। यदि ईश्वर किसी भी समय कर्म नहीं करेगा तो लोग उसका अनुसरण करेंगे और अपने पथ से भटक जायेंगे। इससे समाज की व्यवस्था भंग हो जायेगी तथा अराजकता की स्थिति उत्पन्न हो जायेगी। इस प्रकार, भगवान एक उदाहरण स्थापित करने और मानव जाति को प्रेरित करने के लिए लगातार सही कर्म में लगे रहते हैं (BG 3.22)। ज़रूरत नहीं होने की स्थिति में भी सबको दूसरों के लिए एक उदाहरण स्थापित करने और प्रेरणा देने के लिये, ईश्वरीय इच्छा के अनुसार अपने कर्म जारी रखना चाहिए। इसलिए कर्म को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। इस प्रकार आस्तिक, अपने विचारों को ईश्वर पर केन्द्रित रखते हुए, अपने सभी कार्यों को ईश्वर को अर्पित करने की भावना के साथ कार्य करता है। उनके लिए काम ही पूजा है ओर सही रास्ते पर चलना मुख्य है, मंजिल नहीं। वह धर्म और भक्ति भाव से काम करता है। ऐसे आस्तिक को न तो परिणामों का डर होगा और न ही गलत काम करने या किसी को ठेस पहुँचाने का पछतावा

होगा । वह सफलता में भी अत्यधिक खुशी या प्रशंसा नहीं ढूंढेंगा। अत: दुःख, असमर्थता और निराशा के लिए कोई जगह नहीं रहेगा। किसी आर्गेनाइजेसन के संबंध में हम कल्पना कर सकते हैं कि जब कर्तव्यों का निर्वहन इस विश्वास के साथ किया जाएगा तो उसका अधीनस्थों पर कितना अच्छ प्रभाव पड़ेगा! वे उस पर विश्वास करेंगे और इस निस्वार्थ कार्य में उसका अनुसरण करेंगे। वह एक सच्चा मैनेजर बन जाता है। साथ ही, वह अपने वरिष्ठ मैनेजर की नजर में, अच्छी भावना से काम करने वाला एक आदर्श कर्मचारी हो जाता है। इस भावना से काम करने पर परिणाम की गुणवत्ता भी उत्कृष्ट से कम नहीं होगी क्योंकि काम ईश्वर को अर्पण करने के रूप में एकाग्र और शुद्ध मन से किया गया था।

इस प्रकार आस्तिक एक आध्यात्मिक मार्ग, कर्म योग को अपनाता है, जो उसके लिये परमात्मा के साथ मिलन की स्थिति का मार्ग है। असीमित आनंद, संतुष्टि की स्थिति!

दूसरी तरफ़ एक नास्तिक (non-believe) अपने तरीके से कर्म के सिद्धांत को समझ कर उसकी सराहना कर सकता है। वह जानता है कि प्रत्येक पेशेवर या व्यावसायिक कार्य के साथ कुछ नियम और नैतिक कोड जुड़े होते हैं। वह इच्छित परिणाम हासिल करने के लिए इनके अनुसार कार्य करने के लिए स्वतंत्र है। अंततः वह वांछित परिणामों के लिए किए गए अपने कार्यों के बाद खुशी और संतुष्टि चाहता है। लेकिन वह यह भी समझता है कि वास्तविक दुनिया में किसी कार्य का परिणाम कई अन्य कारकों पर निर्भर करता है। जैसे बाहरी परिस्थितियाँ, जिसमें आसपास का प्रतिस्पर्धी माहौल, समय, संभावना आदि शामिल हैं। इसलिए, सर्वोत्तम प्रयासों के बावजूद सफलता उसके हाथ में नहीं भी हो सकती है। इसलिए, उसे परिणामों के पीछे स्वयं को पूर्ण ज़िम्मेवार या कारण नहीं मानना चाहिए। साथ ही वह यह भी समझता है कि संदेह या हताशा की स्थिति में अपना कर्तव्य कार्य छोड़ना उसे लक्ष्यों के करीब नहीं बल्कि और दूर ले जाएगा। वास्तव में, यह खराब उदाहरण प्रस्तुत करेगा और उससे नीचे के लोगों पर बुरा प्रभाव डालेगा। किसी संगठन के मामले में ऐसी स्थिति हो सकती है जहां सौंपा गया कार्य पूरी ठीक तरह से चल रहा हो और निर्धारित लक्ष्य पहले से ही पूरे हो रहे हों। इस प्रकार, एक वरिष्ठ मैनेजर द्वारा कार्य में सुस्ती और ढिलाई की संभावना हो सकती है। लेकिन यह उनके अधीनस्थों पर नकारात्मक प्रभाव डालेगा और उन्हें हतोत्साहित करेगा। आने वाले समय में इसका निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगेगा। इसलिए, एक नास्तिक भी अपने कर्तव्यों को न तो त्यागेगा और न ही लापरवाही दिखाएगा। वह अपने कर्तव्यों के प्रति निरंतर एवं समर्पित रहेगा तथा अधीनस्थों को भी बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा। इससे लक्ष्यों को प्राप्त करने में और मदद मिलेगी और मानसिक शांति मिलेगी। असफलता की स्थिति में, वह एक तुच्छ चींटी के उदाहरण से सीखता है। एक चींटी के रास्ते में रुकावट आ सकती है और हर बार वह विचलित दिखती है और एक अलग दिशा में भटक जाती है, लेकिन फिर से वह वापस आ जाती है और उसी सही रास्ते पर चलती रहती है। इस तरह उसका अपना सीनियर मैनेजर भी, उसके नेता परिणाम की परवाह किए बिना, उस पर विश्वास करने के लिए बाध्य हो जाएगा। जब कोई व्यक्ति इस समर्पण और ईमानदारी से काम करता है तो डर और पश्चाताप के लिए जगह कहां रह जाती है? नकारात्मक भावनाएँ ख़त्म हो जाती हैं। एक हीं साथ वह अच्छा मैनेजर

और अच्छा कर्मचारी दोनों बन जाता है! चूँकि उसने अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान दिया है इसलिये संतुष्टि और ख़ुशी का एहसास भी अवश्य हीं होगा। उसके लिए अच्छे से काम करना ही खुशी का स्रोत बन जाता है। उसके भी काम के परिणाम की गुणवत्ता उत्कृष्ट से कम नहीं होगी क्योंकि काम उसकी स्वाभाविक इच्छा यानी संतुष्टि, मन की शांति और खुशी को पूरा करने के लिए किया गया है।

इस प्रकार, कर्म का सिद्धांत बहुत ही व्यावहारिक है और धर्म, क्षेत्र या समय की सीमा से परे है। हेनरी फोर्ड द्वारा गुणवत्ता के साथ काम के महान अर्थ को यहां रखना संदर्भ से बाहर नहीं होगा: "*Quality Means Doing it Right When No One is Looking*" - **Henry Ford.** इस आधुनिक भौतिकवादी दुनिया के एक महान उद्योगपति का यह अमर वाक्य यह दर्शाता है कि (अच्छा) कार्य वह है जो पूर्णता की भावना से और अपने आप की संतुष्टि के लिए किया जाता है। सही काम दूसरों से प्रशंसा या मान्यता नहीं चाहता। निःसंदेह, उसकी अपनी संतुष्टि हीं उसे खुशी देगी। यह समझ भगवद गीता में बताए गए कर्म के सिद्धांत के पीछे के सही अर्थ को दर्शाता है।

****

कुमारी एम हर्शीनी , सुपुश्री एन मालती, उमंअ (प्रशासन), तिरूनेलवेली

मंजु मात्यु
सहायक महाप्रबंधक (बिक्री) सी एम्।
बी एस एन एल तमिलनाडु परिमंडल

मेरे जीवन की अविस्मरणीय घटना

हर एक व्यक्ति के जीवन अनेकघटनाओं से जुडे हुए हैं। कुछ तो हम खुशी से याद करते होंगे औरकुछ दुःख से। लेकिन कुछ घटनाएं ऐसे होंगी जो हम भय से याद करेंगे। मैं आज ऐसी एकघटना का चित्रण करने जा रही हूं जिसकी याद करने से ही मैं आज भी कांपती हूं।

करीब ग्यारह वर्ष पहले की बात है। मैंने गाडी चलाना पहले ही सीखीजब मेरे बच्चे छोटे थे और घरेलू काम खतम करके समय पर कार्यालय पहूंचना मुश्किल पड़ रही थी। जब इस घटना हुई तब मैं तृप्पूणित्तुरा टेलीफोन एक्सचेंज में काम कर रही थी।

एक दिन सबेरे घर से कार्यालय को निकलते वक्त कुछ देरी हो गई। इसलिए मैं बहुत तेज़ी से गाड़ी चलाने लगी। उस समय मेरी गाडी मारुति800 मॉडल थी। मेरी गाडी रास्ते केएक रेलवे पुल उतार करके काफी तेज़ी से जा रही थी। दो लाइन की रास्ता थी और बीच में सडक विभाजक नहीं था। पुल पार करते समय मैं ने दूर से एक युवा कोसडक क्रॉस करते हुए देखा। वह मेरी गाडी देखकर सडक के बीच खडा हो गया। मेरे लिए दफतर पहुंचने में देरी हो रही थी और वह युवा तो रुक गया था। मै गाड़ी और तेज़ी से चलाने लगी।

यहां तक सब ठीक ठाक हो रहा था। लेकिन इसके बाद जो हुआ वह सोचकर अब भी मैं कांपने लगती हूँ। मेरी गाड़ी तो उस युवा के पास पहूंच गई और अचानक न जाने कहां से आयाएक बैक इतनी तेज़ी से मेरी गाड़ी के पीछे और उस युवा को, जो सडक के बीच खड़ा था टक्कर मारकर चला गया। वह बेचारा मेरी गाड़ी के आगे आकर गिर पड़ा। मैं ने ब्रैक लगाई और डर के मारे आंखें बंद करके चिल्लाने लगी। मैं तो यह समझ बैठी कि गाड़ी उसके शरीर के ऊपर से चला गया। वह लड़का घायल हो गया होगा या शायद मर गया होगा। मुझे आँखें खोलने की धैर्य भी नहीं था। तब तक किसी को मुझे "बेटी बेटी" कहकर पुकारने की आवाज़ सुनी। मैं ने धीरे धीरे आंखें खोल दी। बाहर भीड़ लगी थी। मैं ने आश्चर्य से यह पहचान लिया कि वह युवा सड़क से उठकर खडा रहा था। दिखने में उन्हें कोई घाव नहीं था। लोग मुझे बधाईयां देने लगे कि मैं ने ठीक समय पर ब्रैक लगाकर गाड़ी को रोक दी। इतने समय में तो वह बैक यात्री जिसने युवा को टक्कर मारा था वह भी आ गया। पुलीस भी आ गए। बातचीत उन दोनों के बीच बढे और मुझे वहां से रिहाई दी गई।आज भी उस घटना को याद करते हुए मेरा मन कांपने लगता है। केवल ईश्वर की कृपा से ही उस दिन मैं उचित काम कर सकी। मैं हमेशा भगवान की आभारी रहूंगी कि मुझे उस दिन बड़ी दुर्घटना से बचायी।।

के. अरुल सेल्वी
उप मंडल अभियंता (राजभाषा)
बी एस एन एल तमिलनाडु परिमंडल

सोशल मीडिया का विद्यार्थियों पर प्रभाव

आजकल घर घर में माता पिता को एक ही बात खा रही है वो है सोशल मीडिया का कैसे बच्चों और विद्यार्थिओं के निजी जीवन को प्रभावित कर रहा है । इस लेख में हर समय ऑनलाइन गतिविधियों में व्यस्त रहने वाले बच्चों में पैदा होने वाली स्मस्सयाओं के बारे जिक्र है। सोशल मीडिया ने युवाओं को अपनी लपेट में तो ले लिया है साथ साथ किशोर अवस्था के विद्यार्थी भी इसके आकर्षण से दूर नहीं हुए। बच्चे वास्तविक दुनिया से अलग हो गए है। हर पल हाथ में लिए मोबाइल फ़ोन लेकर बैठे विद्यार्थियों अपने बारे में, अपने सपने के बारे में सोचना चुक गए है। जब सोचने लगते है तब तक समय निकल जाता है। इन बच्चों के साथ साथ घर में हर वयक्ति का भी तनाव बढ गया है। इस स मस्या का मुख्य कारण सोशल मीडिया पर उनकी बढ़ती व्यस्थता है।

एक अध्य यन के मुताबिक सोशल मीडिया का अधिक इस्तोमाल याद्दाश्ता पर असर डालता है। बच्चे के दिमाग में महत्वकपूर्ण जानकारी सुरक्षित नहीं रह पाती। फ्री टाइम में भी लोग ऑनलाइन गतिविधियों में व्यस्त रहते हैं , जिसके चलते उनके दिमाग को आराम नहीं मिल पाता और इसका सीधा असर उनकी याद्दाश्तं पर पड़ता है। पढाई पर गहरा असर पड रहा है। बच्चे सोशल मीडिया पर अपने दोस्तों द्वारा शेयर किए गए फोटो अथवा स्टेटस मैसेजेज देखते हैं, तो वे भी ऐसा करने लग जाते हैं। उन्हें इस बात की कोई खबर नही रहती कि अगर किसी गलत आदमी के हाथ लगने पर उनकी जिन्दगी पर असर पड सकता है।

सोशल मीडिया की बढती लोकप्रियता की वजह से ऑनलाइन दोस्त बनाने का चलन भी बढ़ते जा रहा है , जिसमें आप ऐसे किसी इन्सान को अपना फ्रेंड बनाते हो जिसको आप निजी तौर पर न तो जानते हो और न ही कभी मिले हो। इस तरह की गई दोस्ती में विश्वास की कमी रहती है। और जितनी जल्दी ऐसे रिश्ते बनते हैं उतनी ही जल्दी टूट भी जाते हैं। मानसिक तौर पर ज़्यादा मज़बूत न होने की वजह से किशोरों में ऐसे टूटते रिश्ते दिमागी चिंता और तनाव का कारण बनते हैं जो की बेहद गंभीर समस्या है। यकिनन सोशल मीडिया दोस्तों से जुड़े रहने का एक बेहतरीन साधन है। लेकिन जिस प्रकार हर चीज़ के नुकसान व फ़ायदे दोनों होते हैं , ये माता-पिता को ही समझना और समझाना चाहिए। ऐसे देखने में आया है कि बडे जानते हुए भी अनजान बने रहते हैं क्यों कि बडों को भी सोशल मीडिया से छुटकारा नही कर पा रहे हैं।

दोस्तों वक्त आ गया है, सोशल मीडिया एक हद तक जरूरी है पर इतना भी नही कि वह जिंदगी ही बन जाए। माता-पिता को भी चाहिए कि वे अपने बच्चों को इन साइट्स का सही प्रयोग करना बताएं व उनकी हर गतिविधि या अपडेट से अवगत होते रहें। आईए, हम सब सोशल मीडिया की लपेट से खुद को और बच्चों को बचाए। दोस्तों को सामने मिले और खुशी की महक बिखेरे।

आर.राधा,
वरिष्ठम हिन्दी, अनुवादक,
कार्या प्रधान महाप्रबंधक,
बीएसएनएल, वेल्लू र

मॉ

हर साल मई महीने के दूसरे रविवार को मातृ दिवस मनाया जाता है । करीब 111 साल से यह परंपरा चल रही है । सभी के लिए प्रथ्ोम ईश्वकर, शिक्षक, दार्शनिक, मार्गदर्शक और मित्र मॉ होती है । इस निरंतर बदलती दुनिया में एक मॉ ही है जो स्थिर है ।

जन्मह से मृत्यु तक मॉ अपने बच्चों को पालती है । ही माँ हमेशा यह सुनिश्चित करती है कि उनके बच्चौ हमेशा स्व स्थ्, सुरक्षित और खुश रहें ।माता-पिता अपने बच्चु को हमेशा कठिन परिस्थिति से बचाने की कोशिश करते हैं और उन्हेंा वह यह सब सुविधा प्रदान करते हैं । मॉ का प्याअल केवल अपने बच्चो को दुलारने के बारे में नहीं है बल्कि अपने बच्चेउ को नैतिक और सांस्कृुतिक मूल्योंै से अवगत कराने के बारे में भी है ।

मॉ एक सुखद अनुभूति है । वह एक शीतल आवरण है जो हमारे दु:ख तकलीफ की तपिश को ढँक देती है । मॉ शब्दु के अर्थ को उपमाओं अथवा शब्दोंह की सीमा में बॉधना संभव नहीं है । भारतीय संस्कॉति में जननी एवं जन्मशभूमि देनों को ही मॉ का स्थाशन दिया गया है । कोई भी व्यभक्ति अपने जीवन में मातृ ऋण से मुक्ती नहीं हो सकता । मनुष्यभ से लेकर पशु एवं पक्षियों तक को आत्म।निर्भर, स्वाीवलंबी कुशल बनाने के लिए उनकी मॉ उन्हें स्वायं से अलग तो करती है परंतु उनकी सुरक्षा के प्रति हमेशा सचेत रहकर अपने ममत्वि को बनाए रख्ती है । एक अच्छी। परवहरिश व्यकक्ति के बेहतर भविष्यक का निर्माण करती है और एक मॉ अपने बच्चेख को बेहतर भविष्यन देने के लिए एक उत्कृछष्टय कार्य करती है ।

अगर वर्किंग महिलाओं की बात करें तो हम सोच भी नहीं सकते कि वह एक साथ कैसे सब कुछ मैनेज करती होंगी । हमें अपने मॉ पर गर्व होना चाहिए जिन्हो ने नौकरी, खेत व पशुओं का काम करने के साथ साथ घर को भी ठीक से चलाने के साथ साथ हमारा पालन पोषण किया है । जन्मह के बाद एक बच्चाे अपनी मॉ को पहले दोस्त के रूप में पाता है जो अतिरिक्तण देखभाल और पोषण के साथ-साथ एक दोस्तप की तरह बातचीत करती है और अपने बच्चेस की सभी गतिविधियों को देखती रहती है ।

मॉ ही है तो अपने बच्चेभ की भवनाओं या आवश्यीकताओं को आसानी से समझ लेती है । वह हर पल अपने बच्चों की सभी जरूरतों को पूरा करने के लिए उसके आसपास बिताती है । बचपन से ही हमारी मॉ हमें एक अच्छाी इंसान बनाने के लिए क्याज गलत है और क्याे सही है, यह बताती रहती है और हमें जीवन में अच्छेस काम करने के लिए प्रोत्साकहित एवं मार्गदर्शन भी करती है ।

हम एक बच्चो के रूप में हमेशा अपनी मॉ को हल्के। में लेते हैं लेकिन उसके बिना हमारा जीवन बेकार है । मॉ ईश्वचर का एक अनमोल उपहार है जिसे हमें प्या र और ड़ेखभाल के साथ रखने की आवश्यवकता है । वह अपने मातृत्वच का काम शुद्ध मन और पूरी निष्ठां से करती है । किसी भी बच्चे के लिए पहली शिक्षक उसकी मॉ होती है और अगर वह उसके मार्गदर्शन में जीवन के सबक सीखता रहे तो उसे सफलता की ऊँचाइयॉ को हासिल करने से कोई नहीं रोक सकता ।

के.सुप्रिया, सुपुत्री श्री ब. कावेट्टीरंगन
सहायक निदेशक (राजभाषा)
बी.एस.एन.एल., कोयंबत्तूर

हिन्दी का मान, राष्ट्र का सम्मान

हिंदी के मान के बारे में बताने के लिए मेरे पास उचित वाक्य नहीं है । हिंदी के मान को एक निबंध के रूप में देना आसान नहीं है । यह कार्य तो गागर में सागर भरने के समान है । फिर भी मैं चंद बातों से यह कोशिश कर रहा हूँ कि इतने बडे देश की एक राष्ट्रभाषा बनाना मेरा कर्तव्य है । हिन्दी हमारी राजभाषा है । इसकी लिपि देवनागरी है । हिन्दी का प्रयोग अत्यदभुत है।

अष्टम अनुसूची के अनुसार देश की भाषाएँ 22 हैं । उनमें से किसी भी भाषा को हमने राष्ट्रभाषा का गौरव नहीं दिया । केवल " हिन्दी" को 14 सितंबर 1949 में राजभाषा का दर्जा दिया गया । सारे देश को हिन्दी के प्रयोग के अनुसार तीन क्षेत्रो में बाँटा गया अर्थात "क", "ख" एवं "ग " क्षेत्र । सब से पहले 'क'क्षेत्र के अंदर उत्तर प्रदेश, मद्य प्रदेश जैसे उत्तर राज्यों में सरकार के सभी संपर्क हिंदी में ही होना अनिवार्य है और पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र आदि "ख " क्षेत्र के अंदर है जिस में हिन्दी के अलावा अपने राज्य की भाषा का भी प्रयोग किया जा रहा है और तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश पश्चिम बंगाल जैसे राज्य "ग" क्षेत्र में है । हमारे दक्षिण प्रांतों में दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा द्वारा बच्चों को हिंदी पढ़ाई जा रही है ।

हमारे बी.एस.एन.एल में भी हिंदी सीखने के लिए कई योजनाएँ जैसे नियमित , निजि, पत्राचार व गहन पाठ्यक्रम । हर साल सितंबर 1 से 14 तक हिंदी पखवाडा मनाया जाता है ।
क्यों हिन्दी का मान राष्ट्र का सम्मान ?

1. हिन्दी एक सरल भाषा है । सीखने के लिए बहुत ही आसान है । बोलने एवं समझने में बहुत सहायक है ।
2. केन्द्र सरकार के कार्यालयों में काम में प्रयोग की जानेवाली भाषा हिन्दी ही है ।
3. सारे देश में व्यापक रूप में फैली हुई एक जनभाषा है हिन्दी ।
4. देश के एक कोने से दूसरे कोने तक व्यापार संबंधित व्यवहार के लिए संपर्क भाषा है
5. कश्मीर से कन्याकुमारी तक के लोग भ्रमण करने के लिए बहुत ही उपयोगी भाषा हिन्दी ही हो सकती है ।

देश भर में लगभग 2500 भाषाएँ बोली जाती है जिनमें से कुछ भाषाओं की लिपि ही नहीं है । परन्तु भारत के पूरे लोगों को एक सूत्र में जोडनेवाली भाषा हिन्दी ही हो सकती है । महात्मा जी के अनुसार , देश के लोगों को एक भाषा से जोडे बिना देश की स्वतंत्रता संभव नहीं है वह भाषा हिन्दी ही हो सकती है । अतः हम सभी हिन्दी का मान बढायेंगे राष्ट्र का सम्मान करेंगे । हिन्दी है हम, वतन है हिन्दुस्तान हमारा ।

जय हिन्द जय हिन्दी जय बी.एस.एन.एल

श्री ब. कावेट्टीरंगन
सहायक निदेशक (राजभाषा)
बी.एस.एन.एल., कोयंबत्तूर

सोच-विचार

बोल रहे थे बुजुर्ग लोग
हमसे चिल्ला चिल्लाके
करो काम रोज अपना
हमेशा सोच विचार करके

मन मेरा मानता नहीं
बात सुनकर उनकी वहीं
सोचे बिना कूद पडा मैं
कीचड भरी कुए में

फंस गया अंदर जाकर
तैरे बिना गहरी कीचड में
ऊपर उठाया हाथ मैंने
किसी का सहारा लेने

बचना हो गया मुश्किल
किसी को वहीं न पाकर
तुरन्त छा गयी घनी अंधेरा
मेरी आँखों को धेर कर पूरा

डर के मारे काँप उठा मैं
झट से जाग उठा बिस्तर से
महसूस किया उसी क्षण मैंने,
हे यह खाली स्वप्ना है पर

बिस्तर में इधर-उधर उलट कर
लेटे लेटे सोचता रहा लंबी देर
उठते हीं मैंने की प्रार्थना
भगवान से हाथ जोडकर

यह स्वप्ना क्यों आज बेकार
जीवन है मेरा अभी काफी दूर
आवें कभी न यह बुरी हाल

समझ गया कारण मैं तत्काल
बिना सोचे काम करने पर
दुःख ही होगी सारी जिन्दगी भर ।

हिन्दी ही हम

करेंगे हम मुक्त हिन्दी को पिंजरे से
बनाएंगे हम दोस्त हिन्दी को जीवन में
प्रसिद्ध है हिन्दी हमारे देश के हर दिशा में
सीखेंगे हम हिन्दी को घर घर में
हिन्दी प्यार का बोल है काम का चीज है

श्यामला. डी
उ.म.अ(प्रचालन),
नेटवर्क प्रचालन, कोयंबत्तूर

आर.रंजिता
प्रबंधन प्रशिक्षणार्थी
कोयंबत्तूर

स्वच्छ भारत - स्वस्थ भारत

स्वच्छ अर्थात पवित्र या शुद्ध एवं स्वस्थ अर्थात तंदुरुस्त या नीरोग, ये दोनों शब्ध एक दूसरे से परस्पर जुडे हैं । स्वच्छता है तो स्वास्थ्य है. जब मनुष्य का मन तो समृद्ध, तन वातावरण स्वच्छ होगा, तभी वह रोग मुक्त होगा और देश के विकास में अपना पूर्णतः योगदान दे पायेगा ।

इतिहास के पन्नों से यह साबित है कि भूलोक में सबसे अधिक सभ्य, प्रगतिशील,, समृद्धिशील और संस्कृत देश वही रहा है, जिसके देशवासी स्वत्थ हैं, क्योंकि अस्वस्थ मनुष्य स्वयं दुखी, रोगी और अपेक्षित होने के साथ-साथ समाज और विश्व के विकास में अपना योगदान देने में असमर्थ होता है । स्वास्थ्य ही धन है - धनी और शिक्षित होकर, यदि मनुष्य अस्वस्थ है, तो उसका जीवन आनंदहीन बन जाती है और उसकी आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है ।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार दुनिया की जनसंख्या की अधिकतम मृत्यु और विकलांगता के मुख्य कारणों में से एक है - प्रदुषण । अपमान की बात यह है कि भूगोल की सबसे प्रदूषित देशों की सूची में भारत तीसरे स्थान पर है जिसके कारण वै हैं कि हैजा, दस्त और टाइफाइड आदी रोगों से पीड़ित हैं । इसके अतिरिक्त वन एवं कृषि-भूमि की अप्रतिष्ठा, ऊर्जा हेतु ईंधन का प्रज्ज्वलन, बाढ़ नियंत्रण और वर्षा जल निकासी एवं उचित कचरा निपटान व्यवस्थाओं की कमी के कारण भारत में प्रदूषण बड़ रही है जिससे कई लोग हृदय, फेफड़ा, परिहृद्-धमनी संबंधित रोगों और कैंसर आदि जानलेनेवाली बीमारियों से पीडीत है ।

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी ने कहा था कि राजनीतिक स्वतंत्रता से ज्यादा ज़रूरी स्वच्छता है । इस बात को पहले वे अपने आचरण में लाये जिस के लिए वे रोज 4 बजे उठकर वर्धा आश्रम की साफ-सफाई करते थे जहाँ वे ठहरे थे । महात्मा जी के स्वच्छ भारत के सपने को साकार बनाने के लिए हमारे प्रधान मंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी ने 2014 अक्तूबर 2 तारीख को स्वच्छ भारत अभियान नामक जन आंदोलन की शुरुआत की जिसके कारण सारे देशवासियों के मन में स्वच्छता के बारे में जागरूकता फैली है ।

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित स्वच्छता मिशन के मुख्य उद्देश्य यह है कि खुले में शौच की प्रवृति की जड़ से हटाने हेतु शौचालयों का निर्माण, स्वच्छता कार्यक्रमों का आयोजन, संपूर्ण देश की आधारभूत संरचना में परिवर्तन, वैज्ञानिक प्रक्रियाओं के प्रयोग से नगरपालिका द्वारा ठोस कचरे का स्वच्छ निपटान आदि। भारत विविध और समृद्ध सांस्कृतिक विरासती देश है । स्वच्छ भारत के निर्माण से पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा, क्योंकि विदेशी पर्यटक स्वच्छता को महत्वपूर्ण मानते है । इससे उत्पन्न राजस्व से सकल घरेलू उत्पादन की वृद्धि होगी । भारत कि संस्कृति विश्व के सभी देशों में मानी जाती है। लेकिन स्वच्छता में हम पीछे पडे हैं । इस स्तिथि को दूर करना हरेक भारतवासियों के परम कर्तव्य है । हम सब मिलकर इस समस्या को सुलझाने हेतु कठोर परिश्रम करें ताकि अपनी आनेवाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ, नीरोग, सुन्दर और सुशील भारत को पुनःस्थापित कर सकें ।

"हम सबका एक ही सपना, स्वच्छ और सुन्दर हो देश अपना"

स्मिता एम. वी
जे.टि.ओ (प्रशासन),
कोयंबत्तूर

मुसकान

पौधे के मुसकान में देखा मैंने
फूलों के खिलना
बादलों के मुसकान में देखा मैंने
बारिश के रिमझिम
पेड़ों के मुसकान में देखा मैंने
पत्तियों का लहराव
आकाशगंगा के मुसकान में देखा मैंने
तारों के प्रकाश
सूरज के मुसकान में देखा मैंने
चाँद के टिमटिमाना
रात के मुसकान में देखा मैंने
जुगनों की चमक
पर.....
सबसे मासूम मुसकान देखा मैंने
नन्हे बच्चे के प्यार भरे चेहरे पर ।

प्रगदीशवरी बी के
सुपुत्री श्री ब. कावेट्टीरंगन
सहायक निदेशक (राजभाषा)
बी.एस.एन.एल., कोयंबत्तूर

पहले

बोलने से **पहले** सुन लो ।
लिखने से **पहले** सोच लो ।
व्यय करने से **पहले** जमा कर लो ।
दोष लगाने से **पहले** सहन कर लो ।
छोडने से **पहले** प्रयत्न कर लो ।
खाने से **पहले** हाथ धो लो
सोने से **पहले** भगवान की याद कर लो
मरने से **पहले** दान दो ।

तणिकाचलम
उप मंड़ल अभियंता (रा.भा.)
सेलम व्यापार क्षेत्र
सेलम

पर्यावरण प्रदूषण

प्रस्ता वना:

पर्यावरण प्रदूषण का अर्थ है पारिस्थि तिकी तंत्र को परेशान करना। इस समस्याष के प्रति लोगों को जागरूक होने की जरूरत है । वे वर्तमान का आनंद ले रहे हैं लेकिन भविष्यत के परिणामों से अनजान हैं । पर्यावरण को प्रदूषित करने से पृथ्वीक का संतुलन बिगडेगा । इसलिए हमें इस समस्याो को और गंभीरता से लेने की जरूरत है ।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार:

पर्यावरण प्रदूषण के तीन प्रमुख प्रकार कुछ इस प्रकार है ।

वायु प्रदूषण:

वातावरण में वायु को प्रदूषित करना वायु प्रदूषण कहलाता है। जहरीली गैस और धुआं हवा में मिल जाती है और वायु प्रदूषण को जन्मद देती है। कार्बन मोनो ऑक्साहइड और सल्फआर डाइऑक्सा इड जैसी विभिन्न। गैसें सांस लेने के लिए अत्यदधिक जहरीली होती है ।

जल प्रदूषण:

जल में अशुद्धता, अपशिष्टी, विषात्म क पदार्थ आदि का विर्वहन जल प्रदूषण कहलाता है । लोग जल निकायों में कचरा, प्ला स्टिैक आदि फेंकते हैं । परिणामस्व रूप पानी उपयोग के लिए हानिकारक हो जाता है ।

भूमि प्रदूषण:

अपशिष्टर और अजैव निम्नीलकरणीय सामग्री को मिट्टी में जमा करने से मिट्टी या भूमि प्रदूषण होता है । अजैव निम्नीणकरणीय कचरा मिट्टी को अनुपजाउ बना देता है। मिट्टी में जहरीले पदार्थ की उच्चू मिलावट इसे पौधों और मनुष्योंण दोनों के लिए अपर्याप्तप बनाती है ।

पर्यावरण प्रदूषण में युवाओं की भूमिका:

नई पीढी या युवाओं की जीवनशैली पर्यावरण प्रदूषण में अधिक योगदान दे रही है । तकनीकी कार्यान्वपयन के कारण वे आलसी होते जा रहे हैं । अब वे बाइक और कारों का उपयोग करते हैं जो पर्यावरण के अनुकूल साइकिल के बजाय अधिक वायु प्रदूषण पैदा करती हैं । उनकी आराम की जरूरत विनिर्माण् उद्योगों द्वारा पूरी की जाती है जो वायु और जल प्रर्दूषण का मुख्य कारण है ।

हालॉकी, युवा अधिक से अधिक जागरूकता बढाकर पर्यावरण की रक्षा कर सकते हैं । स्वपस्थ और पर्यावरण के अनुकूल आदत अपनाने से उन्हेंस इन लक्ष्योंर को प्राप्त करने में मदद मिलेगी । पेड लगाना, साइकिल चुनना या आस-पास की दूरी के लिए पैदल चलना आदि एक बडी मदद होगी।

निष्कुर्ष:

पर्यावरण प्रदूषण एक प्रमुख चिंता का विषय है जो हमारे आनेवाले भविष्यप को खोखला कर देगा । प्रदूषण वर्तमान के लिए खतरनाक है और भविष्या के लिए एक बडे खतरे के रूप में बदल रहा है । इस असंतुलन के लिए हर इंसान जिम्मेखदार है । इसलिए हमें मिलकर काम करने की जरूरत है, आज एक छोटी सी मदद कल एक बडी खुशी लौटाएगी ।

डॉ. एस. राधिका रानी
राजभाषा अधिकारी
भारत संचार निगम लिमिटेड
तिरुनेलवेली/नागरकोविल
व्यापार क्षेत्र

1

वक्त

कौन जाने, कौन है हीरा, है पाषाण कौन
किस के अंदर, कौन सा छुपा ज्ञान।
मत करो किसी का अपमान
बक्त होता बड़ा बलवान।
बच नहीं सकता हो कोई शक्तिमान
वही बनाता है इंसान को रंक और धनवान।

2

स्वाभिमान

जो बाहर छलक जाए
वह होता है अभिमान।
इंसान के अंदर ही समा जाए
वह होता है स्वाभिमान।

3

चिंटू

छोटू का चिंटू
सबसे प्यारा चिंटू।
हुआ पैदा इसने जब
दो किलो का ही था तब।
आ नहीं रहा था बाहर
करने पर भी कोशिश गे बार।
अवतार हुआ इसका जिस दिन
था वह चार्टड अकाउंटेंट का दिन।
कर लिया था अकाउंट इसने
माँ की कोख से उसी दिन निकलने।
सोच लिया होगा दूं माँ को यही भेंट
क्योंकि माँ उसकी है चार्टड अकाउंटेंट।
भगवान ने भी दिया साथ इसको
समझके इसके सच्चे प्यार को।
देखते ही इसको दूर हो जाती सभी दुख
मुस्कान एक इसकी लाती सभी सुख।
अब है यह सबका लाल
अपने परिवार का नौनिहाल।

श्री. प्रिन्सु कुमार,
कनिष्ठर दूरसंचार अधिकारी(पारेषण), होसूर, धर्मपुरी
एसएसए, सेलम बीए

D2M प्रौद्योगिकी (डायरेक्ट टू मोबाइल)

दूरसंचार विभाग (DOT) और भारत के सार्वजनिक सेवा प्रसारक प्रसार भारती एक डायरेक्ट टू मोबाइल तकनीक की व्यवहार्यता का पता लगा रहे हैं जो विडियो और मल्टीमीडिया सामग्री के अन्य रूपों को सीधे मोबाइल फोन पर प्रसारित करने की अनुमति देता है, एक सक्रिय इन्टरनेट कनेक्शन की आवश्यकता के बिना।

D2M प्रौद्योगिकी के बारे में–

- प्रौद्योगिकी ब्रॉडबैंड और प्रसारण के अभिसरण पर आधारित है जिसका उपयोग करके मोबाइल फोन स्थलीय डिजिटल टीवी प्राप्त कर सकते हैं।
- यह उसी तरह होगा जैसे लोग अपने फोन पर एफएम रेडियो सुनते हैं, जहां फोन के भीतर एक रीसिवर रेडियो आवृत्तियों में टेप कर सकता है।
- डी2एम का उपयोग करके, मल्टीमिडिया सामग्री को सीधे फोन पर भी बीम किया जा सकता है।

उपयोग

- इसका उपयोग संभवत: नागरिक- जानकारी से संबंधित सामग्री को सीधे प्रसारित करने के लिए किया जा सकता है।
- इसका उपयोग अन्य चीजों के अलावा नकली समाचारों का मुकाबला करने, आपातकालीन अलर्ट जारी करने और आपदा प्रबंधन में सहायता प्रदान करने के लिए किया जा सकता है।
- इसका उपयोग मोबाइल फोन पर लाइव समाचार, खेल आदि प्रसारित करने के लिए किया जा सकता है।

प्रभाव

- उपभोक्ता अपने मोबाइल डेटा को समाप्त किए बिना वीडियो ऑन डिमांड (वीओडी) या ओवर द टॉ (ओटीटी) सामग्री प्लेटफार्म से मल्टीमिडिया सामग्री का उपयोग करने में सक्षम होंगे और इससे भी महत्वपूर्ण बात, मामूली दर पर।
- यह तकनीक ग्रामिण क्षेत्रों में लोगों को वीडियो सामग्री देखने की अनुमति देगी, जो सीमित या बिना इंटरनेट का उपयोग करते है।
- व्यवसायों के लिए यह दूरसंचार सेवा प्रदाताओं से प्रसारण नेटवर्क पर अपने मोबाइल नेटवर्क से वीडियो ट्रैफिक को उतारने में सक्षम बना सकता है, इस प्रकार उन्हे मूल्यवान मोबाइल स्पेक्ट्रम की भीड कम करने में मदद करता है।

- इससे मोबाइल स्पेक्ट्रम के उपयोग में भी सुधार होगा और बैंडवद्ध मुक्त होगा जो कॉल ड्रॉप को कम करने, डेटा गति आदि बढ़ाने में मदद करेगा।

<u>चुनौतियॉ</u>

- मोबाइल ऑपरेटरों जैसे प्रमुख हितधारकों को एक साथ लाना व्यापक पैमाने पर डी2एम प्रौद्योगिकी लॉच करने में "सबसे बडी चुनौती होगी।"
- प्रौद्योगिकी के बड़े पैमाने पर रोल आउट में बुनियादी ढ़ॉचे में बदलाव और कुछ नियामक परिवर्तन शामिल होंगे।

<u>सरकार की पहल</u>

- दूरसंचार विभाग (DOT) ने उपयोगकर्ता के स्मार्टफोन पर सीधे प्रसारण सेवाओं की पेशकश के लिए एक स्पेक्ट्रम बैंड की व्यवहार्यता का अध्ययन करने के लिए एक समिति का गठन किया है।
- बैंड 526-582 में मेगाहर्ट्स को मोबाइल और प्रसारण सेवाओं दोनों के साथ समन्वय में काम करने के लिए परिपल्पित किया गया है।
- फिल्हाल, इस बैंड का उपयोग सूचना और प्रसारण मंत्रालय द्वारा देश भर में टीवी ट्रांसमीटरों के लिए किया जाता है।

कुमारी एम हर्शीनी , सुपुश्री एन मालती, उमंअ (प्रशासन), तिरूनेलवेली

टी एस अरूल सेन्दिल, 5वी कक्षा.,
सुपुत्र श्री एस तिरूमुरूगअरसन, लेखा अधिकारी
तिरूनेलवेली

कुमारी आर दुर्गा, सुपुत्री आर
शेन्बगवल्ली,उमंअ, एफटीटीएच, नामक्कल

कर्मचारिगण उत्साहित से
प्रतियोगिता में भाग लेते हुए

कार्यालय में योगा दिवस

का/मुख्य महाप्रबंधक, बीएसएनएल,
तमिलनाडु परिमंडल को नराकस में
द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

माननीय मंत्री का
सेवानिवृत्त मुख्य महाप्रबंधक
श्री सी वी विनोद
द्वारा स्वागत।

बीएसएनएल उच्च अधिकारियों की बैठक।

सचिव, दूरसंचार विभाग, नई दिल्ली, का मुख्य महाप्रबंधक,
बीएसएनएल, तमिलनाडु परिमंडल, श्री डी तमिलमणि स्वागत करते हुए।